1316 बजे

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): अध्यक्ष महोदया, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं और अपनी नेता सुषमा जी का भी शुक्रिया अदा करता हूं क्योंकि उन्होंने मुझे मौका दिया है कि मैं राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर अपनी तरफ से दो शब्द कह सकूं।

1317 बजे (डॉ. एम. तम्बिदुरई पीठासीन हुए)

महोदया, राष्ट्रपति जी का अभिभाषण देश और सरकार की दशा तथा दिशा बताता है और उसका परिचय कराने वाला दस्तावेज होता है। सरकार की नीयत और नीति को भी बताता है। राष्ट्रपति जी का अभिभाषण सरकार की कथनी होती है और उसके बाद जो बजट आता है, आर्थिक सर्वे आता है वह सरकार की करनी होती है। यहां सरकार की कथनी और करनी में अंतर दिखाई दे रहा है। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा शुरू हुई है, लेकिन चर्चा से पहले रेल बजट प्रस्तुत हुआ, आर्थिक सर्वे आ गया, आम बजट आ गया और ये तीनों दस्तावेज सरकार के दावे को पूरी तरह से नकारने वाले हैं। सरकार की कलई सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट से खुल गई है। रेल बजट में हमने सुना कि 17 साल बाद कांग्रेस के मंत्री द्वारा पेश किया गया है। कांग्रेस राष्ट्रीय पार्टी है, जब उनके वक्ता बोलते हैं तो सारी जिम्मेदारी राजीव गांधी जी से ले कर सोनिया गांधी जी तक खत्म कर देते हैं।

अभी चिंता मोहन जी बोल रहे थे, उन्होंने देश के बारे में चिंता कम की है, लेकिन सोनिया जी को हर काम का क्रेडिट दिया है। यह उनका सौभाग्य है कि उनकी नेता उनकी बात सुन रही थीं और खुश भी हो रही थीं। यह बात सही है कि प्रशंसा किसी को भी बुरी नहीं लगती है। यह इंसानी स्वभाव ही है। कांग्रेस पार्टी बड़ी सोच वाली पार्टी कही जाती थी और कश्मीर से कन्याकुमारी तक की पार्टी कही जाती थी। खास कर जब रेल बजट आया तो पता चला कि लोग क्षेत्रवाद का इल्ज़ाम क्षेत्रीय पार्टी पर लगाते थे, लेकिन कांग्रेस पार्टी अब राष्ट्र की पार्टी नहीं, राज्य की पार्टी नहीं बल्कि अमेठी से रायबरेली तक की पार्टी रह गई है।

(s1/1320/asa/rp)

पूरे रेल बजट में अमेठी से रायबरेली को जोड़ दो, तो देश को जोड़ दिया है। हर वक्ता की जो परिक्रमा है, वह अमेठी से रायबरेली तक परिक्रमा कर लें तो देश की परिक्रमा मान ली जाती है क्योंकि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह जी ने जो बातें कहीं, उन बातों से मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। जिस तरह से उन्होंने आर्थिक सर्वे का जिक्र करते हुए कहा कि आज भाषा बदल गई, आज हर वर्ष की जीडीपी की चर्चा करने वाले और अभी चिंतामोहन जी ने प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह जी का भी एक बार जिक्र कर लिया और जिक्र

करते हुए उनको माइनॉरिटी का सबसे बड़ा नेता बताया और माइनॉरिटी से वे प्रधान मंत्री बने हैं,...(व्यवधान)

हमारी पार्टी ने भी हमको तुरंत उनके जवाब के लिए खड़ा कर दिया ताकि उनकी जो माइनॉरिटी की फीलिंग है, वह आहत न हो जाए।

माइनॉरिटीज की क्या हालत है, मैं धीरे धीरे उस पर भी आऊंगा लेकिन इस सरकार को न मर्ज़ मालूम है और न दवा मालूम है। इस सरकार के पास हर साल नया वादा है, हर साल उसी डॉक्टर के पास इलाज होता है जिसको मर्ज का पता नहीं है लेकिन आज इस सरकार के पास रिफॉर्म्स के नाम पर मनमोहन सिंह जी का पुराना चेहरा है। वे रेफरेंस आज का नहीं देते हैं। वे कहते हैं कि 1991 में देश की क्या स्थिति थी? तब मनमोहन सिंह जी आए। मैं पूछना चाहता हूं कि तब की स्थिति पर चर्चा हो गई और जब वे आए थे तो उसके बाद बहुत दिनों तक कांग्रेस को सत्ता से बाहर रहना पड़ा। जिस तरह से उनका पर्फामेंस बहुत अच्छा था तो बहुत दिनों तक आप सत्ता में नहीं थे। लेकिन आज की चर्चा कीजिए। देश के एक बहुत बड़े अर्थशास्त्री देश के प्रधान मंत्री हैं। इस पर किसी को कोई शक नहीं है। देश के एक बहुत बड़े अर्थशास्त्री योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह जी और एक बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले बेहतरीन वित्त मंत्री जी चिदम्बरम साहब हैं। इन तीन अर्थशास्त्रियों ने देश को तीन चीजें दी हैं। बेलगाम भ्रष्टाचार, बेकाबू महंगाई और बेरोजगारी। ये जो अर्थशास्त्रियों की त्रिमूर्ति कांग्रेस ने देश के सामने पेश की है, जिसको शॉर्ट फॉर्म में हम लोग एमएमसी कहते हैं, मनमोहन सिंह जी, मोंटेक सिह जी और चिदम्बरम साहब। ये जो एमएमसी है, इन्होंने पिछले नौ साल में एक युवा को रोजगार नहीं दिया। पूरी कांग्रेस रोजगार की बहुत बात करती है। सिर्फ राहुल गांधी जी को कांग्रेस का उपाध्यक्ष बनाने के अलावा देश के युवाओं को कुछ नहीं दिया। जो भी दिया, एक रोजगार राहुल गांधी जी को दिया है। जब से यह सरकार आई है, नौ सालों में पांच लाख लोग बेरोजगार हुए हैं। आम बजट पर जब चर्चा होगी तो हमारे लोग उसकी चर्चा करेंगे लेकिन अभी आम बजट आया तो लगा कि, रेल बजट में चूक गये। बंसल साहब बहुत पोपुलर आदमी हैं। यहां हमारी नेता आदरणीय श्रीमती सुषमा स्वराज जी का गुडविल उनके साथ रहा। इनका स्नेह उनके साथ रहा है। पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर के नाते सब सांसदों से उनका सम्पर्क रहा। हम सबकी भी इच्छा थी कि वह बजट अच्छे से पढ़ें। लेकिन लगता है कि कांग्रेस तो रेल बजट पढ़ना भूल गई थी और वे पहले रेल मंत्री थे जो बजट भी ठीक से नहीं पढ़ पाए। लेकिन जब चिदम्बरम साहब आए, शुरु में बहुत अच्छी हारवर्ड वाली अंग्रेजी उन्होंने सुनाई।

(t1/1325/sk-rp)

कुछ पोएट्री एंड में तमिल में सुनाई क्योंकि वह वहां से चुनाव लड़ते हैं। उन्होंने किसान, मजदूर, नौकरीपेशा, व्यापारी, कर्मचारी किसी की चिंता नहीं की बल्कि बजट के दिन पूरा देश मायूसी की गर्त में चला गया, डूब गया। इस सरकार से कोई अपेक्षा नहीं है। सरकार अपनी कमियां छुपाने के लिए नए-नए प्रयोग कर रही है। महंगाई बढ़ रही है और बजट एलोकेशन में चार-पांच परसेंट बढ़ा रहे हैं, महंगाई 12 परसेंट बढ़ गई है।...(व्यवधान) आप हमसे बड़े हैं, महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर आर्थिक हालात पर दो-चार लाइनें हैं इसीलिए मैं बोल रहा हूं।

महोदय, कांग्रेस के लोग एक साल की चर्चा करते हैं फिर पांच साल की करते हैं लेकिन हम आपसे पांच साल का नहीं 50 साल का हिसाब लेने के लिए खड़े हुए हैं। आपको देश को बताना होगा। अभी चर्चा हो रही थी कि यह सिस्टम बना हुआ है। मैं पूछना चाहता हूं कि आखिर यह सिस्टम बनाया किसने है? इस सिस्टम को दीमक लग गया है। ऐसा सिस्टम आपने तो बनाया था इसलिए आपको सिस्टम की पूरी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी। सरकार के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी हैं। माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी जब प्रधानमंत्री थे, मेरा सौभाग्य है कि मैंने उनके साथ मंत्री के रूप में काम किया था। विपक्ष के नेता के रूप में हमने मनमोहन सिंह जी को देखा है। हमारा उनके साथ संबंध रहा है और आज वे देश के प्रधानमंत्री हैं। मेरे मन में उनके लिए सम्मान है। मैं कहना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री जी, आज न तो आपकी सरकार की विल है और न गुड विल है। सरकार में इच्छाशक्ति का अभाव है। इस सरकार के पास करने के लिए कुछ काम नहीं है, सिर्फ लोगों के साथ वादा खिलाफी करना, आम जनता के साथ सिर्फ नारे लगाना है। आज 'कांग्रेस का हाथ आम आदमी के साथ' कहने वाली सरकार का हाथ और पंजा लोगों की गर्दन तक पहुंच गया है और कांग्रेस के इस नारे से लोगों का डर लगता है। यूपीए-1 में सरकार ने महंगाई दी और यूपीए-2 में घोटाले दिए। सरकार की यूपीए-1 ने जाते-जाते कैश फोर वोट कर लिया था जिसे सुनने के बाद बहुत दर्द होता है। हम इस सरकार से बहुत उम्मीद करते भी नहीं हैं। इस देश में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो उम्मीद करे कि यह सरकार कुछ कर रही है। यह काम चलाऊ सरकार है, सरकार के नाम पर रुतबा भी नहीं है। मंत्रियों के दरवाजे पर भीड़ भी कम हो गई है। अजित सिंह जी पहले भी मंत्री रहे हैं, हम लोगों के साथ भी थे, ये जनाधार वाले नेता हैं। आप अन्य मंत्रियों के यहां चले जाइए, कोई इनसे उम्मीद ही नहीं करता है। ये समझते हैं कि ये बिजी हैं, सुबह से शाम तक इंतजाम में रहते हैं। हम एक घोटाले का नाम लेते हैं कि दूसरा शुरु हो जाता है। टूजी घोटाले का नाम लिया तो सीडब्ल्यूजी घोटाला हो गया, उसके बाद हैलीकाप्टर घोटाला आ गया। मैं पार्टी का प्रवक्ता हूं, अभी हम उसके बारे में बोल रहे थे कि दूसरा घोटाला सामने आ गया। इस सरकार से इस जनता को कोई उम्मीद है, हमें ऐसा विश्वास नहीं है और

आपको भी नहीं होना चाहिए। आपसे लोग नाउम्मीद हो चुके हैं, लोग मान चुके हैं कि इनके बस का कुछ नहीं है। आप चुनाव आने का इंतजार कीजिए, जनता तैयार है, आप नौ साल से थक गए हैं, आपका आराम करना तय है।

(u1/ 1 3 30/bks-kkd)

इसलिए एक शायर ने कहा है - ''तुम और वफा करोगे यह मैं मानता नहीं, उसको फरेब दो जो तुम्हें जानता नहीं।'' हम लोग तुम्हें अच्छी तरह से जानते हैं।...(व्यवधान) फरेब वाला शेर इन्हें तुरंत समझ में आता है, लेकिनआपको नहीं आता है।

श्रम और रोज़गार मंत्री (श्री मल्लिकार्जुन खरगे): आपने क्या कहा, हमने सुना नहीं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): मैं गिरिजा जी की स्पीच लेकर आया हूं। कांग्रेस की तरफ से दो लोग बोले थे, प्रथम चाको साहब बोले थे, जो प्रिविलेज कमेटी के चेयरमैन भी हैं और दूसरी गिरिजा जी बोली थीं जो प्रोटोकोल वॉयलेशन कमेटी की चेयरमैन हैं। लेकिन मैं कोई प्रोटोकोल का वॉयलेशन नहीं कर रहा हूं। तीसरे जो मैम्बर बोले हैं, वह हर काम की उपलब्धि प्रधान मंत्री जी से निकालकर सोनिया जी को दे रहे थे। अभी मंत्रिमंडल का कोई विस्तार भी नहीं होने वाला है, इसलिए उन्हें इसका कोई लाभ भी नहीं होना है। मुझे चिंता मोहन जी की ज्यादा चिंता हो रही है। लेकिन कांग्रेस के वक्ता जब बोलते हैं तो मैं सोचता हूं कि कितनी मेहनत उन्हें करनी पड़ती होगी। इसलिए एक शायर ने कहा है - ''खामोशी छुपाती है ऐब और हुनर दोनों को, शख्सियत का अंदाजा उसकी गुफ्तगू से होता है।'' इसलिए गिरिजा जी कम से कम प्रधान मंत्री जी से नसीहत ले लेतीं। वह कम बोलते हैं, कम बोलना ज्यादा अच्छा होता है। जितना कम बोला जाए, अच्छा है, जितना लम्बा बोलेंगे, ज्यादा पकड़े जाओगे। इसलिए कम बोलना चाहिए। लेकिन उन्होंने जो अपना भाषण दिया है, उसी में से मैं कुछ पाइंट यहां रखना चाहता हूं। आज गिरिजा जी और चाको साहब ने इस सरकार की प्रशंसा तो करनी थी।

लेकिन इस सरकार के बारे में तो क्रेडिबिलिटी की बात की जाती है। इस देश में दो बातों का कांग्रेस के लोगों ने अच्छे से प्रचार कर दिया कि प्रधान मंत्री जी बहुत ईमानदार हैं, यह बड़ी अच्छी बात है, आपने प्रचार कर दिया कि प्रधान मंत्री बहुत ईमानदार हैं। देश का प्रधान मंत्री तो ईमानवाला होना चाहिए, ईमानदार होना चाहिए। दूसरा प्रचार कर दिया कि एंटनी साहब बड़े ईमानदार हैं। यानी दो लोग बहुत ईमानदार हैं और किसी मंत्री को यह सौभाग्य प्राप्त नहीं हो रहा होगा। कांग्रेस के लोग यह बड़ा प्रचार कर रहे हैं कि ये दोनों हमारे यहां बड़े ईमानदार हैं।...(व्यवधान)

श्री विजय बहादुर सिंह (हमीरपुर, उ.प्र.): बाकी लोग क्या हैं?

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): बाकी क्या हैं, उस पर मैं नहीं बोलूंगा, अपने बारे में आप खुद बताइये। मैं आपका प्रवक्ता नहीं हूं जो आपके बारे में बोलूंगा। ...(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : जो सच बोल रहे हैं, वह तो बोलिये।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): मैं वही बोल रहा हूं।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे : आप वह नहीं बोल रहे हैं।

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): उनके दो मंत्री ईमानदार हैं, इसका प्रचार किया गया। आज यह कहा जा रहा है कि घर लुट गया, लेकिन चौकीदार ईमानदार है, चौकीदार तो बहुत ईमानदार है, लाठी लेकर बाहर खड़ा था, अब पीछे से घर लुट गया, उसकी जिम्मेदारी किसकी है, वह चोर की जिम्मेदारी है। वहां जो चौकीदार खड़ा था, उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। अगस्ता डील हो गई, हैलिकाप्टर की खरीद में स्कैम हो गया, इसकी जिम्मेदारी किसकी है। प्रधान मंत्री जी और रक्षा मंत्री बहुत ईमानदार हैं। सर्टिफिकेट कहां से लेकर आये हैं, यह भी नहीं पता है। खुद ही सर्टिफिकेट बांट रहे हैं। ईमानदारी की मिसाल बहुत हैं। मनरेगा की योजनाओं के बारे में गिरिजा जी ने बताया। मनरेगा, जो महात्मा गांधी जी के नाम की योजना है, पहले उसे भी लोग सोनिया गांधी जी से जोड़ते थे। आजकल अध्यक्ष जी से जोड़ते थे, अब उपाध्यक्ष जी से भी जोड़ने लगे। मनरेगा योजना के बारे में बोलते हुए उन्होंने इसे राहुल गांधी की भी ड्रीम योजना बता दिया और उस योजना के बारे में यह कह दिया कि हर चौथा घर मनरेगा से लाभान्वित है। मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि गिरिजा जी को मालूम होना चाहिए कि हर चौथा घर इस योजना से भ्रष्टाचार की गिरफ्त में है, यही मनरेगा की सचाई है। इनकी जितनी भी योजनाएं बनीं, उन योजनाओं को अगर मैं कहूं प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना, उसमें आपने अभी कटौती कर दी। राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में आपने कहा कि उस पर बहुत काम करेंगे। लेकिन आपने कुछ किया नहीं, बिहार का पैसा रोके बैठे हैं। दूसरे राज्य में दूसरी किस्त भी दे रहे हैं। लेकिन जो एनडीए शासित राज्य हैं, उनमें आप इसे रोके बैठे हैं। आज देश में पेयजल का संकट है, आप कुछ नहीं कर रहे हैं। आपको इसे वारफुटिंग पर लेना चाहिए।

(w1/1335/gg-mmn)

हम लोगों के यहां वॉटर लेवल नीचे जा रहा है। जब मैं अपनी कॉन्स्टिट्यूएंसी, भागलपुर में जाता हूँ, तब देखता हूँ कि कुआँ सूख रहा है, लेकिन सरकार कुछ नहीं कर रही है। आज हमारे मित्र अजीत सिंह जी उड्डयन मंत्री हैं। आज एयर इण्डिया की जो हालत है, उस पर अलग से चर्चा होगी। लेकिन ये जो एयरलाइन है, जब किसी एक एयरलाइन की स्ट्राइक होती है, तो वह किराया बढ़ा देता है। आज आपको ड्रीमलाइनर ग्राउंड करना पड़ा है। यह किसकी जिम्मेदारी है? आज बुनकरों के बारे में सरकार ने बड़ी चर्चा

की है। बुनकर की क्या हालत है? हम लोग बुनकर के क्षेत्र से आते हैं। भागलपुर में, वैसे तो इनको यही याद आता है कि राजीव गांधी जब प्रधान मंत्री थे, तब वहां बहुत बड़ा दंगा हुआ था, जिसकी वजह से कांग्रेस वहां समाप्त हो गई। लेकिन बुनकर की जो उंगली कटी थी, उसकी चिंता आपने नहीं की है क्योंकि वहां आपको वोट नहीं मिलता है। हमारी वहां की सरकार चिंता कर रही है। आज बुनकर के लिए आपको जो इंतजाम करना चाहिए था, वह कोई इंतजाम इस बजट के अंदर नहीं है। सर्व शिक्षा अभियान के अंदर बहुत बड़ी-बड़ी बातें हुई हैं। जब अटल बिहारी वाजपयी प्रधान मंत्री थे, तब यह योजना आई थी, डॉ जोशी उस वक्त शिक्षा मंत्री थे, और उन्होंने जो योजना शुरू की उसके अंदर कुछ बढ़ाने का काम आपने नहीं किया है बल्कि उसको कमज़ोर करने का काम किया है।

सभापति जी, इस सरकार के पास बताने के लिए भी कुछ नहीं है और छुपाने के लिए भी कुछ नहीं है। क्योंकि बताने के लिए कोई उपलब्धि ही नहीं है और छुपाएं क्या? इनका सब कुछ हम लोग जानते ही हैं। जो ये लोग नहीं जानते हैं, वह भी हम लोग जानते हैं। ये तो सरकार में हैं तो सब कुछ हरा-हरा दिख रहा है। ग्रीन रेवल्युशन वाला हरा नहीं है, कुछ और हरा है। इशारों में कह रहा हूँ क्योंकि फिर कुछ कहें तो ये कहेंगे कि यह क्यों कहा?

राष्ट्रपति जी का जो अभिभाषण है, उसमें चर्चा करते हुए सरकार ने आतंकवाद की बड़ी चिंता की है। आतंकवाद और सांप्रदायिकता की चिंता की है। सांप्रदायिकता किसने बढ़ाई है? आपने बढ़ाई है। पहले जब देश के अंदर आतंक होता था तो उसमें पाकिस्तान के लोग शामिल होते थे। अपने देश के लोगों पर कभी उंगली नहीं उठती थी। गृह मंत्री जी ने बयान दिया, पहले तो वे कह गए, बाद में सुषमा जी ने उनसे मांफी भी मंगवा दी। लेकिन आतंकवाद को कलर और मज़हब से जोड़ने की कोशिश की है। भारतीय जनता पार्टी कभी भी आतंकवाद को मज़हब के चश्मे से नहीं देखती है। इसलिए हम पूरी ज़िम्मेदारी से कहना चाहते हैं कि आतंकवाद को उन्होंने जो रंग देने की कोशिश की है, उस रंग को देने के लिए उनको देश के लोग कभी क्षमा नहीं करेंगे। इस बात को याद रखना चाहिए कि इस देश के अंदर आज आतंक का जो वातावरण तैयार किया जा रहा है, वह देश के लोगों को कमज़ोर करेगा। सरकार की आदत हो गई है, जो पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म पर भारत को कटघरे में खड़ा नहीं कर सकता था, सरकार के बयानों से भारत कटघरे में खड़ा होगा।

सभापति जी, इसलिए मैं बहुत जिम्मेदारी से कहना चाहता हूँ कि इस देश में आतंकवाद का कोई रंग नहीं होता, आतंकवाद का कोई मज़हब नहीं होता है और आतंकवाद को मज़हब से जोड़ने की जो कोशिश सरकार करती है, उसको देश के लोग कभी क्षमा नहीं करेंगे।

सभापति जी, यह सरकार अल्पसंख्यकों का बड़ा दर्द रखती है। यह सरकार ऐसा दावा करती है कि जैसे यह सरकार अल्पसंख्यकों के लिए दुबली हुई जा रही है। मैं अल्पसंख्यक मामलों की कमेटी में हूँ। मैं कल ही उसकी बैठक में गया था। वहां मैं कुछ कागज़ पढ़ रहा था, इसलिए ताज़ा आंकडें ले कर आया हूँ। मैं बहुत ज़िम्मेदारी से कह रहा हूँ कि आपने अल्पसंख्यकों के लिए अल्पसंख्यक मंत्रालय बना दिया लेकिन उसको दांत नहीं दिए। अगर एक-आधा सरकार की बात लें तो आपने अल्पसंख्यक कल्याण के लिए 11 करोड़ रूपये हरियाणा में दिए, उसमें से दो करोड़ रूपये खर्च हुए हैं। इसी तरह महाराष्ट्र में आपने 45 करोड़ रूपये दिए और सिर्फ 9 करोड़ रूपये खर्च हुए हैं। उत्तर प्रदेश, जहां अभी शहीद ज़िया उल हक़ की शहादत की चर्चा हो रही है, जो सरकार अपने को सो कॉल्ड सेक्युलर सरकार कह रही है, और वहां पर ...(व्यवधान)

(x1/1340/cs-vr)

श्री नीरज शेखर (बलिया): क्या अब हम लोगों को बीजेपी से सेक्युलरिज्म सीखना होगा? अब हम लोगों के ऐसे दिन आ गये हैं।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): इससे भी बुरे दिन आने वाले हैं, चिंता मत कीजिए।...(व्यवधान) इससे भी बुरे दिन आने वाले हैं, यूपी में भ्रमण करके देखिए कि वहां क्या हाल है, माइनोरिटी के लोगों का क्या हाल है?...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): गुजरात में तो सब जगह ऐसा होता है।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): उत्तर प्रदेश में 82 करोड़ रूपए इनको मिले थे और केवल 22 करोड़ रूपए खर्च किए।...(व्यवधान) यानी पिछले साल 82 करोड़ रूपए इनको मिले और इन्होंने 22 करोड़ रूपए वहां खर्च किए।...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): शाहनवाज़ जी, आप वहां खड़े होकर मुसलमानों की बात मत कीजिये।...(व्यवधान) इधर खड़े होकर मुसलमानों की बात कीजिये, वहां खड़े होकर मुसलमानों की बात मत कीजिये।...(व्यवधान) आप और कोई बात कीजिए।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): क्या ये लोग मुसलमानों के ठेकेदार हैं?...(व्यवधान) मुलायम सिंह यादव जी की ठेकेदारी यूपी में हम समाप्त करके आएंगे, चिंता मत कीजिए।...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): ये लोग ऐसी बात करेंगे।...(व्यवधान) जो लोग मरवाते हैं, वे ऐसी बात करेंगे।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): अभी तो आपने मरवाया है, यूपी में मरवाया है न, यही रिकार्ड पर आया है ...(व्यवधान) क्या अल्पसंख्यक डीएसपी को मरवाने वाले बात करेंगे?...(व्यवधान) एक गरीब अल्पसंख्यक लड़का डीएसपी हुआ, उसकी हत्या इनकी सरकार के समय में हुयी।...(व्यवधान) वहां के लोग आपको क्षमा नहीं करेंगे।...(व्यवधान) आप जरा देवरिया में जाइए...(व्यवधान) बलिया में घूमकर आइए...(व्यवधान) आपको वहां जाकर पता लगेगा।...(व्यवधान) इस बार वह इंतजाम होगा...(व्यवधान) अल्पसंख्यक लोग आपका वह इलाज करेंगे...(व्यवधान) आप चुनाव आने दीजिए।...(व्यवधान) महोदय, इन्हें टोकने से रोका जाये।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN (DR. M. THAMBIDURAI): Shri Syed Shahnawaz Hussain, please address the Chair. Why are you speaking to them? You address the Chair.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): महोदय, असम के अंदर जो सरकार अपने को अकलियतों की हमदर्द कहती है,...(व्यवधान) उस सरकार में 29 करोड़ रूपए मिले और अकलियत के लिए 8 करोड़ रूपए खर्च किए। यह मंत्रालय की रिपोर्ट है।

महोदय, अकलियत के साथ दिक्कत यह है कि जब हम अपना दर्द रखते हैं तो हमारे ठेकेदार अलग हो जाते हैं। हर समाज के लोग अपना दर्द रख सकते हैं, लेकिन अकलियत के ठेकेदार यूपी में कोई और बन जाते हैं, दूसरी जगह कोई और बन जाते हैं। हम अगर अकलियत का दर्द रख रहे हैं, अगर यूपी के अंदर एक अकलियत का नौजवान मरा है तो उसके दर्द पर मरहम लगाइए, जख्म पर नमक मत छिड़किए। ...(व्यवधान) यूपी के बलिया, देवरिया में अकलियत के लोग आपको देख रहे होंगे।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Please wind up. There are many Members, who are waiting to speak.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): महोदय, मैं वाइंड अप कर रहा हूं। मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि आज अकलियत और अकसीरियत के नाम पर भारतीय जनता पार्टी बांटने की कोशिश नहीं करती। इसलिए हम कहते हैं कि आपने अकलियत मंत्रालय क्यों बनाया? अगर अटल बिहारी वाजपेयी जी चाहते तो सर्व शिक्षा अभियान में अकलियत शिक्षा अभियान अलग से बनाते, लेकिन उन्होंने कहा कि हम सबको पढ़ायेंगे।...(व्यवधान) हमने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना बनायी तो हमने कहा कि प्रधानमंत्री सड़क योजना के अन्तर्गत जहां एक हजार की आबादी होगी, पांच सौ की आबादी होगी, अल्पसंख्यक का घर हो या बहुसंख्यक का घर हो, वहां सड़क बनायेंगे। हमने जो भी योजना बनायी, उसमें कभी कोई दर्द रखने का अलग से काम नहीं किया।

महोदय, मैं दो-तीन मिनट में अपनी बात को समाप्त कर रहा हूं। आज अकलियत के लिए और अकसीरियत के लिए वह दौर खत्म हो गया है, जो वोट के ठेकेदार इस नाम पर ठेकेदारी कर रहे थे, वह ब्लैक लिस्टेड कम्पनी होने वाली है।...(व्यवधान) चिंता मत कीजिए।...(व्यवधान) उनका कांट्रेक्ट खत्म होने वाला है और मैं आपको यह कह देना चाहता हूं।...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): वह शाहनवाज़ हुसैन जी तय नहीं करेंगे, उसे देश की जनता तय करेगी।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): आज वह दौर नहीं है, आज लोग कहते हैं कि देश के अंदर कोई माहौल है, देश के अंदर हिन्दू और मुसलमान इस मादरे वतन की संतान की तरह मिलकर रहते हैं। आज मुल्क में कहीं पर कोई दंगा फसाद नहीं है। थोड़ा उत्तर प्रदेश में दंगा हो जाता है, वह अलग बात है, लेकिन पूरे देश में वातावरण अच्छा है।...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Many speakers are waiting to speak. You please wind up. There are six Members waiting to speak from your party itself. They have to speak.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): महोदय, मैं बस समाप्त कर रहा हूं। वे मेरे भाषण के बीच में बार-बार टोक रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री रामकिशुन (चन्दौली): आप लोग तो दंगा कराने के लिए मशहूर हैं।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): महोदय, मैं समाप्त कर रहा हूं। इस देश में दोनों समाजों को लड़ाने के लिए तरह-तरह की तकरीर कर दी जाती है। इस देश में यह मानकर चलना चाहिए कि वह दौर बदल गया है। कुछ लोग कह देते हैं कि हमें नाम बदलना पड़ता है...(व्यवधान) अब यह तो कोई तरीका नहीं है, ये लगातार हमें टोक रहे हैं।...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): आप चेयर की तरफ देखकर बात कीजिए। आप हमारी तरफ देखकर बात मत कीजिए।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): आप देखने लायक हैं नहीं तो क्या देखें?

श्री नीरज शेखर (बलिया): आप बहुत देखने लायक हैं।...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): महोदय, यह इनका कोई तरीका नहीं है।...(व्यवधान) यह कोई तरीका तो नहीं है।...(व्यवधान) हम बोल नहीं पा रहे हैं।...(व्यवधान)

(y/1345/san-hcb)

MR. CHAIRMAN (DR. M. THAMBIDURAI): You are creating problem for yourself.

… (*Interruptions*)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): ये हमारे देखने पर पाबंदी लगा देंगे? इनका राज उत्तर प्रदेश में है, यहाँ नहीं है जहाँ किसी को देखने पर पाबंदी लगा देंगे। ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: As you said, please conclude.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): उपाध्यक्ष जी, यह तरीका बहुत गलत है जो अपना रहे हैं। इनके जो नेता बोलेंगे, उनको भी हम टोककर बता देंगे। शाहनवाज़ हुसैन को मुलायम सिंह को भी टोकना आता है। हम बता देंगे। ...(व्यवधान) यह ठेकेदारी नहीं चलेगी। ज़िया-उल-हक़ का परिवार आपसे डरेगा, हम नहीं डरेंगे। यह कोई तरीका है? ...(व्यवधान) बार-बार टोक रहे हैं। ...(व्यवधान)

श्री नीरज शेखर (बलिया): ये कैसे कह रहे हैं कि हमें बोलने नहीं देंगे? ...(व्यवधान)

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): आपने नहीं बोलने दिया तो हम भी नहीं बोलने देंगे। ...(व्यवधान) ये समाजवादी पार्टी के लोग अकलियत के नाम से चिढ़ते हैं। ...(व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

(Interruptions) ... (Not recorded)

MR. CHAIRMAN: Please take your seats.

… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Except the speech of Shri Syed Shahnawaz Hussain, nothing else will go on record.

(Interruptions) ... (Not recorded)

MR. CHAIRMAN: Please take your seats.

… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Shri Hussain, please conclude.

… (*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Please wind up. Do not drag on.

श्री सैयद शाहनवाज़ हुसैन (भागलपुर): सभापति जी, मैं अपनी बात रख रहा था। कोई भी नेता जब अकलियत की बात करता है और यदि मैं अकलियत समाज में पैदा हुआ हूँ तो समाजवादियों को मुझे रोकने का अधिकार नहीं है। वे भले ही हमारी कम्यूनिटी से नाराज़ हैं, लेकिन हमको रोकने का अधिकार उनको नहीं है। ...(व्यवधान) सभापति जी, क्या समाजवादी पार्टी दो मिनट बिना टोके शाहनवाज़ हुसैन को बोलने दे सकती है? ...(व्यवधान) हम जाएँगे उत्तर प्रदेश और इनकी पोल खोलेंगे। ...(व्यवधान)

सभापति जी, मैं अच्छी बात कह रहा था। मैं कह रहा था कि मुझे डेढ़ मिनट दीजिए, मैं कनक्लूड कर दूँगा। मैं आपको कह रहा था कि आज मुल्क का वातावरण अच्छा है। आज किसी यूसुफ़ ख़ान को दिलीप कुमार बनने की ज़रूरत नहीं है। आज किसी महज़बी बानो को मीना कुमारी बनने की ज़रूरत नहीं है। आज किसी बदरुद्दीन काज़ी को जॉनी वॉकर बनकर काम करने की ज़रूरत नहीं है। आज किसी मुमताज़ को मधुबाला बनकर काम करने की ज़रूरत नहीं है। आज शाहनवाज़ हुसैन, शाहनवाज़ हुसैन बनकर काम कर सकता है और आमिर खान, सलमान खान और शाहरुख़ खान अपने नाम से काम कर सकते हैं। इसलिए इस मुल्क के अंदर लोगों को बाँटने की कोशिश को रोकना चाहिए। जो कोशिश कांग्रेस ने की है, हम उस कोशिश की मज़म्मत करते हैं। ...(व्यवधान)

सभापति जी, हम अपनी बात को सिर्फ एक बात कहकर खत्म करना चाहते हैं। मैं पिछले 14 साल से पार्लियामैंट में हूँ। मैं इस तरह से कभी टैम्पर लूज़ नहीं करता, न मैं कभी किसी को आहत करता हूँ। लेकिन मैं एक बात कहकर अपनी बात को समाप्त करता हूँ कि इस देश में देशभक्तों का अपमान और देशद्रोहियों का सम्मान मत कीजिए। जो इस मुल्क में पैदा हुआ है, उसकी कोई भी पूजा पद्धति हो, हम मिलकर रहेंगे। कोई ज़रूरत नहीं है इस देश में कि यह कह दिया जाए कि हिन्दू और मुसलमान के बीच में से पुलिस हटा दो, हम आपस में ठीक कर लेंगे। ऐसा कहने की कोई ज़रूरत नहीं है। हिन्दू और मुसलमान इस देश में 15 मिनट नहीं, 1500 साल मिलकर रहेंगे। यह मुल्क हमारा वतन है और हम लोग यहाँ मिलकर रहेंगे, इसमें किसी को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)